M.A. (Part – II) (Pali & Prakrit) (CBCS Pattern) Third Semester

MAPPCBCS301 – Paper – I : Anguttar Nikay Va Pali Kavya

(अंगुत्तर निकाय व पालि काव्य)

P. Pages : 4 **GUG/W/18/10446**

Time : Three Hours * 2 6 5 2 * Max. Marks : 80

सूचना :- 1. सर्व प्रश्न सोडविणे आवश्यक आहे.
सभी सवाल छुड़ाना अनिवार्य है।
2. स्वीकृत माध्यमात उत्तरे लिहा.
स्विकृत माध्यम में उत्तर लिखिए।

1. अ) ससंदर्भ भाषांतर करा **कोणतेही एक.** **10**
ससंदर्भ अनुवाद कीजिए **कोई भी एक।**

''अट्ठिमे, भिक्खवे, हेतू अट्ठ पञ्ञया आदिब्रम्हचरियिकाय पञ्ञाय अप्पटिलध्दाय पटिलाभाय, पटिलध्दाय भिय्योभावाय वेपुल्लाय भावनाय पारिपूरिया संवत्तन्ति। कतमे अट्ठ? इध, भिक्खवे, भिक्खु सत्थारं उपनिस्साय विहरति अञ्ञतरं वा गरुट्ठानिय सब्रम्हचारि, यत्थस्स तिब्बं हिरोत्तप्पं पच्चुपट्ठितं होति पेमं च गारवो च। अयं, भिक्खवे, पठमो हेतु पठमो पच्चयो आदि-ब्रम्हचरियिकाय पञ्ञाय अप्पटिलध्दाय पटिलाभाय, पटिलध्दाय भिय्योभावाय वेपुल्लाय भावनाय पारिपूरिया संवत्तति।

किंवा / अथवा

''अट्ठहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु सब्रम्हचारीनं अप्पियो च होति अमनापो च अगरु च अभावनीयो च। कतमेहि अट्ठहि? इध, भिक्खवे, भिक्खु अप्पियपसंसी च होति, पियगरही च, लाभकामो च, सक्कारकामो च, अहिरिको च, अनोत्तप्पी च, पापिच्छो च, मिच्छादिट्ठि च। इमेहि खो, भिक्खवे, अट्ठहि धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु सब्रम्हचारीनं आप्पियो च होति अमनापो च अगरु च अभावनीयो च।

ब) अंगुत्तर निकायातील अट्ठक निपाताचे महत्व सांगा. **6**
अंगुत्तर निकाय में अट्ठक निपात का महत्व बताईए।

किंवा / अथवा

नन्दसुत्तांविषयी थोडक्यात माहिती लिहा.
नन्दसुत्त के बारे में जानकारी दीजिए।

2. अ) ससंदर्भ भाषांतर करा **कोणतेही एक.** **10**
ससंदर्भ अनुवाद कीजिए **कोई भी एक।**

'पुन च परं, आवुसो, भिक्खु यायं कथा अभिसल्लेखिका चेतोविवरणसप्पाया, सेय्यथीदं - अप्पिच्छकथा सन्तुट्ठिकथा पविवेककथा असंसग्गकथा विरियारम्भकथा, सीलकथा समाधिकथा पञ्ञाकथा विमुत्तिकथा विमुतिञाणदस्सनकथा, एवरुपिया कथाय निकामलाभी होति अकिच्छलाभी अकसिरलाभी। सम्बोधिपक्खिकानं, आवुसो, धम्मानं अयंततिया उपनिसा भावनाय।

किंवा / अथवा

'पुग्गलो पि, आवुसो, दुविधेन वेदितब्बो सेवितब्बो पि असेवितब्बो पि। चीवरं पि, आवुसो, दुविधेन वेदितब्बं - सेवितब्बं पि असेवितब्बं पि। पिण्डपातो पि। सेनासनं पि, आवुसो, दुविधेन वेदितब्ब - सेवितब्बं पि असेवितब्बं पि। गामनिगमो पि, आवुसो, दुविधेन वेदितब्बो - सेवितब्बो पि असेवितब्बो पि। जनपदपदेसी पि आवुसो, दुविधेन वेदितब्बो - सेवितब्बो पि असेवितब्बो' पि।

ब) मेघियसुत्तांचा सारांश लिहा. **6**
मेघियसुत्त का सार लिखिए।

किंवा / अथवा

सुतवासुत्ता विषयी माहिती स्पष्ट करा.
सुतवासुत्तं के बारे में जानकारी दीजिए।

3. अ) ससंदर्भ भाषांतर करा **कोणतेही एक.** **10**
ससंदर्भ अनुवाद कीजिए **कोई भी एक।**

वुत्तं हेतं भगवता, वुत्तमरहता ति मेसुतं- ''द्वीहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो पुग्गलो यथाभतं निक्खितो एवं निरये। कतमेहि द्वीहि? पापकेन च सीलेन, पापिकाय च दिट्ठिया। इमेहि खो, भिक्खवे, द्वीहि धम्मेहि समन्नागतो पुग्गलो यथाभतं निक्खित्तो एवं निरये'' ति। एतमत्थं भगवा अवोच। तत्थेत इति वुच्चति -
''पापकेन च सीलेन, पापिकाय च दिट्ठिया। एतेहि द्वीहि धम्मेहि, यो समन्नागतो नरो। कायस्स भेदा दुप्पञ्ञो निरयं सोपपज्जती'' ती अयं पि अत्थो वुत्तो भगवता, इति में सुतं ति।

किंवा / अथवा

वुत्तं हेतं भगवता, वुत्तमरहता ति मे सुतं - ''नयिदं, भिक्खवे, ब्रम्हचरियं वुस्स ति जनकुहनत्थं, न जनलपनत्थं, न लाभसक्कारसिलोकानिसंसत्थं, न 'इति मं जनो जानातू' ति। अथ खो इदं, भिक्खवे, ब्रम्हचरियं वुस्सति अभिञ्ञत्थञ्चेव परिञ्ञत्थ चा'ति। एतमत्थं भगवा अवोच। तत्थेतं इति वुच्चति -
''अभिञ्ञत्थं परिञ्ञत्थं, ब्रम्हचरियं अनीतिहं।
अदेसयि सो भगवा, निब्बानोगधगामिनं।।
''एस मग्गो महत्तेहि, अनुयातो महेसिभि।
ये ये तं पटिपज्जन्ति, यथा बुध्देन देसितं
दुक्खस्सन्तं करिस्सन्ति, सत्थुसासनकारिनो'' ति।।
अयं पि अत्थो वुत्तो भगवता, इति मे सुत्तं ति।

ब) इतिवृत्तक दुकनिपातातील प्रथम सुत्ताचे महत्व विषद करा. **6**
इतिवृत्तक दुकनिपात के प्रथम (पहिले) सुत्त के बारे में जानकारी दिजिए।

किंवा / अथवा

सुखविहार सुत्ताविषयी थोडक्यात माहिती लिहा.
सुखविहार सुत्त के बारे में जानकारी दीजिए।

4. अ) ससंदर्भ भाषांतर करा **कोणतेही एक.** **10**
ससंदर्भ अनुवाद कीजिए **कोई भी एक।**

''धम्मारामो धम्मरतो,
धम्मे ठितो धम्मविनिच्छयञ्ञू।
नेवाचरे धम्मसन्दोसवादं,
तच्छेहि नीयेथ सुभासितेहि।।
''हस्सं जप्पं परिदेवं पदोसं,
मायाकतं कुहनं गिध्दिमानं।
सारम्भं कक्कसं कसावं च मुच्छं,
हित्वा चरे वीतमदो ठितत्तो।।

किंवा / अथवा

''कच्चि अभिण्हसंवासा, नावाजानासि पण्डितं।
उक्काधारो मनुस्सानं, कच्चि अपचितो तया।।
''नाहं अभिण्हसंवासा, अवजानामि पण्डितं।
उक्काधारो मनुस्सानं, निच्चं अपचितो मया।।
''पञ्च कामगुणे हित्वा, पियरुपे मनोरमे।
सध्दाय धरा निक्खम्म, दुक्खस्सन्तकरो-भव।।
''मित्ते भजस्सु कल्याणे, पन्तं च सयनासनं
विवित्तं अप्पनिग्धोसं, मत्तञ्ञू होहि भोजने।।

ब) धम्मिक सुत्ता विषयी माहिती स्पष्ट करा. **6**
धम्मिक सुत्त के बारे में जानकारी लिखिए।

किंवा / अथवा

त्रिपिटक साहित्यात सुत्त निपाताचे महत्व स्पष्ट करा.
त्रिपिटक साहित्य में सुत्तनिपात का महत्व स्पष्ट कीजिए।

5. अ) टिपा लिहा **कोणतेही दोन.** **6**
टिप्पणियाँ लिखिए **कोई भी दो।**

1) निस्सय सुत्त

2) मेत्तासुत्त

3) सोमनस्स सुत्त

4) राहुल सुत्त

ब) योग्य पर्याय निवडा. **10**
सही विकल्प चुनिएँ।

1) अंगुत्तर निकायात एकूण किती सुत्तांचा समावेश आहे.
अंगुत्तर निकाय में कितने सुत्तो को सम्मेलित किया है।
1) 2308 2) 2506
3) 2310 4) 2000

2) अंगुत्तर निकायाची सर्वात मोठी विशेषता कोणती?
अंगुत्तर निकायकी सबसे बड़ी विशेषता क्या है?
1) संख्या बध्द शैली 2) अक्षर बध्द शैली
3) गुण बध्द शैली 4) वाण बध्द शैली

3) भगवान बुध्दांनी कितव्या सुत्तांमध्ये संघाच्या एकतेचे महत्व प्रतिपादन केले आहे.
भगवान बुध्द ने कौनसे सुत्त में संघ के एकता का महत्व प्रतिपादन किया है।
1) 3 2) 10
3) 8 4) 15

4) भगवान बुध्द किती लक्षणांनी युक्त होते.
भगवान बुध्द कितने लक्षण से युक्त थे।
1) 25 2) 30
3) 32 4) 50

5) सुत्तनिपात खुद्दक निकायाचा कितवा ग्रंथ आहे?
सुत्तनिपात खुद्दक निकाय का कितने क्रम का ग्रंथ है?

1) 5 2) 4
3) 1 4) 3

6) सिध्दार्थ गौतमाचे आचार्य किती होते.
सिध्दार्थ गौतम के आचार्य कितने थे।

1) 5 2) 6
3) 7 4) 8

7) सुत्त निपातात किती वग्ग आहेत.
सुत्त निपात में कितने वग्ग हैं?

1) 10 2) 5
3) 7 4) 9

8) अंगुत्तर निकाय हा ग्रंथ किती निपातात विभक्त आहे.
अंगुत्तर निकाय यह ग्रंथ कितने निपातों में विभक्त है।

1) 15 2) 12
3) 11 4) 10

9) सुत्तपिटकातील अंगुत्तर निकाय हा ग्रंथ कितव्या क्रमांकाचा आहे?
सुत्तपिटक में अंगुत्तर निकाय यह ग्रंथ कितने क्रम पर है।

1) 1 2) 4
3) 3 4) 6

10) 'इतिवृत्तक बुध्दवचन नसेल तर इतर काहीही बुध्दवचन नाही' असे कोणत्या विद्वानाचे मत आहे.
इतिवृत्तक बुध्दवचन नही होगा तो और कोई भी बुध्द वचन नही है। ऐसा किस विद्वान का मत है।

1) आचार्य रत्नाकर शान्ती 2) डॉ. अलेक्झान्डर कनिंगहॅम
3) ह्यु - एन - त्सँग 4) ए. जे. एडमंड

****